

Geography

Page No. 01

Date: / /

(8.) भिन्न - भिन्न क्रिया द्वारा निर्मित अपरदन स्तहों की व्याख्या कीजिए।

Ans ⇒ अपरदन स्तह अणुभंग समतल स्तहों के लिए प्रयोग किया जाता है भिन्नका निर्माण पूर्ण या अपूर्ण अपरदन चक्र के फलस्वरूप हुआ है सामान्य भू-स्थीय अपरदन सागरीय अपरदन वेडिप्लेनशन तथा संभवतः अन्य प्रक्रमों द्वारा अपरदन (ब्रुक) स्तह का निर्माण होता है प्रक्रम के अनुसार इसमें भिन्नता पायी जाती है।

पुरानी अपरदन स्तहों के अवशेष इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करता है कि कितने धार और कब अनाच्छादन की शक्तियों ने समतल स्थापना के प्रयास किये हैं अपरदन स्तह से भू-दृश्य के ऐतिहासिक विचार तथा इसके वर्तमान रूप का व्याख्या में मदद मिलती है अपरदन स्तहों की फ्लैचार्ड तथा उत्पत्ति के अध्ययन द्वारा अपरदन के प्राचीन प्रक्रमों तथा आधार तलों का ज्ञान होता है।

⇒ अपरदन स्तहों के प्रकार और उनकी विशेषताएँ :- अपरदन स्तहों के अतिगर्त पेंनिप्लेन, पेंनप्लेन वेडिप्लेन, सागरीय अपरदन द्वारा निर्मित मैदान हिमानी तथा परिहिमानी अपरदन स्तह सम्मिलित किये जाते हैं इसके अतिरिक्त अनापृति स्तह भी एक प्रकार के अपरदन स्तह हैं जो तलछट के

जमाव के नीचे ढक जाती है और तलछट के हट जाने पर धरातल पर प्रकट हो जाती है।

अपरदन सतहों का निर्माण विभिन्न भू-बैज्ञानिक संरचनाओं और चट्टानों को अपरदन द्वारा काट कर होता है। इसका रूप मैदान से मिलता है। डेविंस के अनुसार अपरदन सतह का निर्माण ढाल पतन द्वारा होता है जिसकी अंतिम अवस्था पेंनिप्लेन है। किंग के विचार में ढालों का विकास समतल निर्बलन द्वारा होता है। जिससे पेंडिमेंट के सम्मिलित से अपरदन सतह का निर्माण होता है जिससे पेंडिप्लेन कहते हैं। 1960 के बाद प्रक्रम अध्ययनों तथा तंत्र सिद्धांत के विकास के बाद अपरदन सतहों की संकल्पना पर आधारित किथा जाने लगी।

* पेंनिप्लेन :- पेंनिप्लेन अथवा समतल मैदान एक विशिष्ट आकृति है जे. डेविंस के अपरदन चक्र की अंतिम अवस्था में विकसित होता है। पेंनिप्लेन समतल धरातल का मैदान नहीं बल्कि हल्के उच्चावच का धरातल है जिसमें नदियाँ मन्द गति से अत्यंत धीमी ढाल पर चौड़ी घाटी के रूप में प्रवाहित होती हैं। जिसके बीच बल-विभाजक हल्की ऊँची भूमि के रूप में पाये जाते हैं। इस मैदान में ढाल न्यूनतम होता है जिस पर मलयों का स्थानान्तरण संभव हो सके।

हाल का निर्माण मुख्य नदियों द्वारा होता है छोटी नदियों में मुख्य नदियों की तुलना में हाल कुछ अधिक तीव्र होता है। यह एक के अंतिम अवस्थाओं का अवस्था परिवर्तित करता है इसका अर्थ यह भी समझना चाहिए कि अंतिम रूप है तट से अंदर की ओर पेंसिलेन की ऊंचाई बढ़ती जाती है। पेंसिलेन का निर्माण प्रारम्भ तट के पास से होता है क्योंकि सबसे पहले नदी किनारा पर ही अपरदन के आधार-तल का प्राप्त करती है धीरे-धीरे तट के अंदर की ओर पेंसिलेन का विकास होता जाता है। यहाँ प्रौढावस्था के अंतिम चरणों का धरातल वर्तमान रहता है।

डेविस महोदय ने पेंसिलेन के निर्माण के लिए एक लम्बा भू-वैज्ञानिक अवधि होना चाहिए। इतनी लम्बी किसी भू-खण्ड के लिए स्थिर रहना संभव प्रतीत नहीं होती है।

सैद्धांतिक रूप से पेंसिलेन की पहचान निम्नलिखित गुणों के आधार पर की जा सकती है—

- 1) पेंसिलेन का रूप
- 2) पेंसिलेन पर विक्षेप की प्रकृति
- 3) पेंसिलेन पर बाल प्रवाह की प्रकृति
- 4) पेंसिलेन के अवस्थाओं की ऊंचाई में समता

- * पेनिप्लेन का रूप :- पेनिप्लेन के रूप का मुख्य गुण मंद ढालों और निम्न धरातल की प्रधानता है।
- * पेनिप्लेन पर विक्षेप की प्रकृति :- पेनिप्लेन पर गुरुत्वरित मलबा की गहरी चादर ढालनी चाहिए। इवण कटिबंधों में बने पेनिप्लेन पर मलबे की गहरी चादर मिलती है।
- * जल-प्रवाह विन्धारन :- पेनिप्लेन की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इस पर जलप्रवाह नदियों की संरचना से अच्छी तरह अल्प अनुकूलित होता है। अल्प अनुकूलित अनागरीय अप-रदन द्वारा निर्मित क्षेत्र हैं मैदान में नहीं पाया जाता है।
- * शिखरीय ऊँचाइयों में संगत या स्वमता :- जहाँ विरुद्ध क्षेत्र में अल्प अनुकूलित जल-प्रवाह प्रणाली के साथ-साथ ऊँचाई में स्वमता मिलती है तो बहुत संभव है कि वह क्षेत्र पेनिप्लेन का अवशेष है।
- * पेनिप्लेन :- क्रिक ने सामान्य अपरदन के लिए पेनिप्लेन शब्द के लिए प्रयोग किया है। इनके अनुसार नदियों के पारिष्क अपरदन द्वारा अन्तररचरिता-क्षेत्र का अपरदन और बाद मैदान का स्वमवर्द्धन और अंततः सममितन होता है। इस विधिसे जो आकृति निर्मित होती है उसे पेनिप्लेन की संज्ञा दी है।
→ पेनिप्लेन वाद मैदानों के सममितन से बनते हैं। वाद मैदान में तलछटों का हल्का आवरण होता है और मैदान के किनारे ऊँचे ढाल वाले होते हैं। क्रिक के अनुसार चक्र के अंत तक वाद मैदान के किनारे तीव्र ढाल वाले बनते हैं।

मैदान के विस्तार होते हैं किनारे की ढाल वाले बने होते हैं और बाढ़-मैदान का विस्तार होता जाता है। अतः पैनप्लेन का रूप पैनप्लेन से भिन्न होता है।
 -> पैनप्लेन पेंडुप्लेन की दुलना में अधिक सपाट होता है और अवरिष्ट मानाडनाग अधिक खड़े ढाल वाले होते हैं। पैनप्लेन में प्रदुत्तरित मलबों की प्रधानता मिलती है। वहाँ पैनप्लेन में परतदार नदी-जलो-टंक का निर्माण पाया जाता है।

चक्र के अंत में नदी के क्षैतिज अपरदन द्वारा सभी स्थलखण्ड का कट कर समतल रूप में हो जाना संभव नहीं प्रतीत होता है। फिर बाढ़-मैदान चक्र की अंतिम अवस्था में उत्पन्न स्थला-कृति के पुरे क्षेत्रफल के बहुत थोड़ा अंश में पाया जाता है।

* सागरीय अपरदन द्वारा निर्मित मैदान:-

सागरीय मैदान के निर्माण के लिए बहुत लम्बे काल तक समुद्री सतह का स्थिर रहना आवश्यक है। सागरीय अपरदन द्वारा (निर्मित मैदान) किसी क्षेत्र के निम्नीकरण और मैदान निर्माण के लिए भूपृष्ठीय अपरदन के दुलना में बहुत अधिक समग्र लगता है क्योंकि सागरीय अपरदन तट के एक संकीर्ण भाग में सीमित रहता है।

सागरीय अपरदन द्वारा निर्मित मैदान
 मैदान समुद्र तट पर पाया जाता है सागरीय
 मैदानों का धाराल अधिक सपाट होता
 है और ढाल की तीव्रता स-धाल के तर्क
 बढ़ती जाती है सागरीय मैदान में
 सागरीय निक्षेप सागरीय कोरल
 तथा गोल्लानाट वधरी इत्यादि वर्तमान
 में पाये जाने की संभावनायें हैं।
 सागरीय मैदान बहुत प्राचीन हैं
 और अल्पकालिक हो गये हैं वहाँ
 सागरीय निक्षेप के प्रमाण अपरदन
 तथा अहुरसरण द्वारा नष्ट हो भी
 सक्ता हैं।

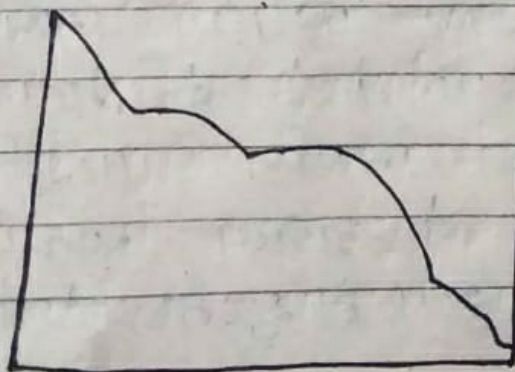
सागरीय अपरदन द्वारा निर्मित
 मैदान में प्रायः अह्यारोपित जल-प्रवाह
 प्रणाली का विकास होता है जिस साग-
 रीय अपरदन सतह पर विकसित हैं वहाँ
 जल प्रवाह निक्षेप की ढाल से निर्मायित
 होता है और बाद में नीचे की चट्टानों
 पर अह्यारोपित हो जाता हैं।

* => पंडिलेन :- पंडिलेन मंद ढाल के
 विरुद्ध क्षेत्र हैं जिनमें तीव्र ढाल वाली
 अवशिष्ट पहाड़ियों मिलती हैं इनका निर्माण
 कई पांडेमेंटों के मिलने से होता है
 इनका निर्माण पारिर्वक अपरदन से
 हुआ हो अथवा स-गर्ष के पीछे डटने
 से हुआ हो शुष्क प्रदेशों में विरुद्ध अपरदन

सतह मिलती है बिन्दु पेडिलोन कहा गया है।

* => हिमानी तथा परिहिमानी अपरदन सतहें:- हिमानी क्षेत्र में स्थल रूप के विकास में अपरदन चक्र की व्याख्या का प्रयास किया गया। हिमानी पहले से ही वर्तमान अपरदन सतह में परिवर्तन आई है।

* => वहुल अपरदन सतह:- प्रत्येक महादेश में कुछ ऐसे क्षेत्र मिलते हैं जहाँ धरातल विभिन्न ऊँचाइयों पर स्थित अपरदन सतहों द्वारा निर्मित है विभिन्न अपरदन चक्र द्वारा निर्मित समप्राय मैदान या अपरदन सतह अलग-अलग ऊँचाइयों पर मिलते हैं ऐसे अपरदन सतहों को बहुल अपरदन सतह कहते हैं। भारत में छोटा नागपुर का पठार इसका अच्छा उदाहरण है पठार का पश्चिमी भाग पार कहलाता है। पंक ने सीदीनुमा स्थल रूप को स्कार्प निर्बतन द्वारा निर्मित बताया है इसे सीपानागार पेडिमेंटों का खोल कहा गया है।



वहुल अपरदन चक्र